Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. X, Issue No.XX, October-2015, ISSN 2230-7540

विकेश निझावन का शिल्प विधान

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. X, Issue No. XX, October-2015, ISSN 2230-7540

विकेश निझावन का शिल्प विधान

Dr. Sonia Rana*

Assistant Professor

संक्षेपण – विकेश जी की कहानियों, कविताओं उपन्यास, लघुकथा की भाषा बहुत ही सरल एवं स्पष्ट है। भाषा का सामान्य एवं प्रचलित रूप ही इनकी समस्त विधाओं में मिलता है। विकेश जी की अपनी अलग भाषा एवं शिल्प है एक–एक वाक्य और एक–एक शब्द के प्रयोग से हम लेखक को पहचान सकते है। विकेश के शब्द चयन के अन्तर्गत तत्सम, तद्भव, अँग्रेजी, उर्दू, युग्म, पुनरावृत्ति शब्दों का यथास्थान प्रयोग किया है इनकी भाषा सरलता एवं सहजता, रोचकता व स्वाभाविकता से ओत–प्रोत है। विकेश द्वारा रचित साहित्य का अभिव्यंजन शिल्प में उनकी गद्य और पद्य दोनों प्रकार की रचनाओं के कलापक्ष पर विचार किया गया है। शोधकर्त्री डॉ. सोनिया ने लेखक की रचनाओं के कलात्मक सौष्ठव पर विस्तार से विचार करने के पश्चात् यह निष्कर्ष निकाला है कि उन्होनें बिम्ब व प्रतीक का पद्य में बहुत सुन्दर प्रयोग किया है। अलंकार, तत्सम इत्यादि के प्रयोग से उनकी रचनाओं का कलात्मक सौन्दर्य और भी अधिक बढ़ जाता है।

'शिल्प' शब्द का हिन्दी में प्रयोग अंग्रेजी के 'टेकनीक' पर आधारित है जिसका अर्थ है, ''कलात्मक कार्यविधि की वह रीति जो संगीत अथवा चित्रकला से प्राप्त है।'' 'वृहद् हिन्दी कोष'' – ''शिल्प से अभिप्राय हाथ से कोई वस्तु तैयार करना अथवा दस्तकारी या कारीगरी है।''

----------♦----------

विकेश निझावन की भाषा सीधी, सरल व सहज है। यह स्वाभाविकता एवं रोचकता को भी अपनाए है। भाषा का सामान्य रूप ही इनकी कहानियों में उपलब्ध होता है। इनकी भाषा कलात्मक या शुद्ध साहित्यक न होकर आज के शिक्षित समाज की भाषा है। इन्होंने भाषा में प्रचलित मुहावरों के साथ उर्दू और अंग्रेजी के शब्दों का निःसंकोच प्रयोग किया है। विकेश जी ने भावानुरूप भाषा को सहजता के साथ प्रयोग किया है। भाषा को ये अपनी और से गढ़ते नहीं, भाव के स्वरूपानुसार ही भाषा आती और बदलती है। इनकी भाषा कथ्य और बोध के अनुरूप है। यही कारण है कि उनकी हिन्दी में अंग्रेजी शब्दों का इतना अधिक प्रयोग हुआ है। भाषा का सरल एवं स्पष्ट रूप 'न चाहते हुए' कहानी के इस उदाहरण से चित्रित हो जाता है– 'दीदी कट रही थी तो मैंने देखा, मम्मी–पापा, एक दूसरे के चेहरे की ओर देखने लगें हैं।''

एक ताजगी, सच्चाई और भाषा की सहायता के साथ जटिल विचारों, भावों को व्यक्त करने का माध्यम विकेश निझावन को एक समर्थ कहानीकार के लिए आश्वस्त करता है विकेशजी के साहित्य की भाषा सधी हुई है और व्यंग्य प्रयोगों ने उसकी क्षमता को और भी बढ़ाया है। चिन्तन और व्यंग्य का ताना–बाना भी कहीं–कहीं रचनाओं की व्यंजना को नयी ताकत प्रदान करता है। 'जीवन का दर्द' कहानी की रसीली भाषा एक ओर तो कहानी को रसमय और आकर्षक बनाती है तो दूसरी ओर उसमें दिया हुआ परिवार का दर्दीला पक्ष दूसरों को भी दर्द में डुबो देता है। ''मैं तिरछी नजर से अतुल की ओर देखते हुए मुस्कायी थी। केवल उसके चेहरे पर होने वाली प्रतिक्रिया जानने के लिए। लेकिन उनके चेहरे पर न कोई रंग आया, न गया। गर्दन झुकाये रोटी चबाता रहा वह! लड़की तो माइंड में भी है।' एकाएक जैसे बिट्टों का ख्याल आया था, 'पढ़ी–लिखी तो मैट्रिक तक ही लेकिन सुन्दर बहुत है।'

विकेश जी की बाल रचनाओं की शैली सहज और सरल है। यहॉ पर न तो मिश्रित व जटिल वाक्यों का प्रयोग हुआ है औन न किसी बात को अधिक घुमा–फिरा कर कहा गया है। भाषा की रोचकता विषय को अधिक प्रभावशाली बनाती है। जब तक वर्णित विषय में रोचकता न होगी बालक उसे सहज ग्रहण नहीं कर पायेगा। बाल साहित्य की भाषा में स्वाभाविकता की अहम भूमिका रहती है किसी भी घटना का प्रसंग देते समय या किसी दृश्य का वर्णन करते समय बच्चों की भाषा बिल्कुल उन्हीं जैसी स्वाभाविक होनी चाहिए जिसे समझाने में कोई कठिनाई नहीं आये। पशु–पक्षी सम्बंधी गीतों के लिए भाषा का स्वाभाविक होना आवश्यक है ''रात घिरी छाया/अंधियारा/न कोई चांद न कोई तारा/कमरे की खिड़की से देखो/घूम रहा है जुगनू प्यारा।'' लोककथाओं के साथ–साथ लोकगीत भी देश या समाज की सर्वांगीण झांकी प्रस्तुत करते है। अतः लोकप्रचलित शब्दावली का अधिक प्रयोग होना स्वाभविक ही है जो बाल साहित्य के लिए अपेक्षित भी है विकेश जी के बालगीतों के लोक प्रचलित शब्दों का प्रयोग हुआ है। कुछ उदाहरण यथावत है – 'सोटी, रोटी, इठलाना, भला, पहिया, घड़, बसेरा, खोटी, हांकना, कसर, मंजूर, घमण्ड, फालतू, संदेशा इत्यादि । विकेश जी की अधिकतर लधु कथाओं में छोटे किन्तु पैने वाक्य देखनें को मिलते है जो सतसैया के दोहों की तरह 'देखने में छोटे लागे घाव करे गंभीर' वाली कहावत पर खरे उतरते है' ''इन हाथों से वह कविताएँ लिखा करता था। इन हाथों से वह कहानियॉ करता था। इन हाथों से वह चित्र बनया करता था। विकेश निझावन की लघुकथाओं में लघुवाक्य विन्यास इस प्रकार दृष्टव्य है – 'अब वह कुछ दिन का मेहमान है। अगर सभी

ऐसा सोचने लगे ? इसमें हर्ज ही क्या है। क्या बात बहुत उदास लग रहा है। तू ? हॉ यार, पत्नी पिछले एक सप्ताह से ठीक नहीं है। क्या हुआ उसे/कुछ समझ नहीं आ रहा यार। वह एकदम से खामोश है। इसमें कैसी परेशानी। कहने को कुछ होगा तो कह देगी।''

लेखक एवं कवि विकेश निझावन को मुहावरे और लोकोक्तियों का विशिष्ट ज्ञान है । यही कारण है कि अभिव्यक्ति के इस सौन्दर्य विधायक तत्व के कारण ही उनकी भाषा में इनका स्वाभाविक सौन्दर्य आ गया है । इन्होनें गद्य ही नहीं, अपितु पद्य में भी यत्र–तत्र मुहावरों और लोकोक्तियों का बहुत सुन्दर प्रयोग किया है जिनमें से कुछ उदाहरण निम्न प्रकार से है – दम तोड़ना, हाथ–पांव काटना, भ्रम निकलना, हवा में बह गया, जले पर नमक छिड़कना, जार–जार रोना विकेश जी ने अंलकारों का प्रयोग किया है जैसे अनुप्रास अलंकार ''पीले पत्तों का अहसास/कही ये महक/उड़न जाये ..... बहुत सताया है तूने/ बहुत रूलया है तूने'' उपमा अलंकार का भी प्रयोग किया है जैसे – ''चंदा मामा यों मुस्काये/जैसे हमको पास बुलाये''। विकेश निझावन ने अपनी काव्य रचनाओं में बिम्बों का बड़ा ही सुन्दर प्रयोग किया। यदि कहा जाए कि बिम्ब के क्षेत्र में विकेश निझावन सिद्वहस्त है तो कोई अभियुक्ति नहीं होगी । विकेश के काव्य – संग्रहों का अध्ययन करते हुए हम देखते है कि कुछ बिन्दु, सूत्र, विचार, बिम्ब या घटनाएं बार–बार उनकी स्मृति में छायी रहती है और उनकी कविताओं में कहीं न कहीं आती रहती है जैसे – नदी, पेड़, आग, चिड़िया, लड़की, गॉव के बिम्ब–विचार एक बारगी देखने पर उनकी रचनाओं पर पुनरावृत्ति पर आरोप लगाया जा सकता है।

विकेश निझावन ने विभिन्न प्रकार की शॅलियों को अपनाया है आत्मकथात्मक शैली, वर्णनात्मक शैली, चित्रात्मक शैली, व्यंग्यात्मक शैली, फलैक बैक शैली का प्रयोग अपनी रचनाओं में किया है । फलैश बैक शैली जैसे ''मुझे याद है/बचपन में मैनें/अपने ऑगन में/गुलाब का/एक नन्हा–सा/पौधा लगाया था/और/वह लगाते समय/एक नन्हा–सा कॉटा/मेरी अंगुली में/चुभ आया था ।

सहायक ग्रन्थ सूची

कुमार प्रेम, समकालीन हिन्दी उपन्यास : कव्य विश्लेषण, हिन्दू प्रकाशन, अलीगढ़।

कुसुम डोभाल, हिन्दी बाल काव्य में प्रतीक एवं कल्पना तत्व, लाइब्रेरी बुक सेन्टर प्रकाश, मालीवाड़ा, दिल्ली–6.

गणेशन, हिन्दी उपन्यास साहित्य का अध्ययन, राजपाल एन्ड सन्स, दिल्ली।

जगमोहन शर्मा, सव्च्छन्दतावाद और दिनकर का काव्य, शारदा प्रकाशन, नई दिल्ली, 1955.

रश्मि कुमार, नई कविता के मिथक–काव्य, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली – 110002.

Corresponding Author

Dr. Sonia Rana*

Assistant Professor

E-Mail – satishkumarrana@hotmail.com